SET – 5

समूह अ

बहुवैकल्पिक उत्तरों मे से सही उत्तर चुनेः–

1 'कर्मवीर' कविता के कवि हैः–

(क) दिनकर (ख) महादेवी वर्मा (ग) अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध (ध) इनमे से कोई नही

2 मोहसिन के पास कितने पैसे थे?

(क) पांच (ख) तीन (ग) पंद्रह (ध) बारह

3 अमीना किस दिन रो रही थी ?

(क) होली (ख) बकरीद (ग) ईद (ध) दशहरा

4 हामिद किसके साथ रहता है ?

(क) पिता के साथ (ख) माँ के साथ (ग) काकी के साथ (ध) दादी के साथ

5 नमाज खत्म होने के बाद लोग क्या कर रहे थे ?

(क) हंस रहे थे (ख) बात–चीत कर हरे थे (ग) गले मिल रहे थे (ध) पैसे गिन रहे थे

6 हामिद चिमटा कितने मे लेता है ?

(क)तीन रुपये में (ख) तीन आने (ग) एक आने (ध) दो आने

7 किसका खिलौने"रुस्तमे हिंद" था ?

(क) मोहसिन का (ख) महमूद का (ग) हामिद का (ध) सम्मी का

8 "यत्न" का अर्थ हैः–

(क) चमकीला (ख)प्रयास (ग) भय (ध) भाग्य

9बालगोबिनभगत 'संझा' कब गाते थे ?

(क) कातिक में (ख)गर्मियों की शाम में (ग) गर्मियों की सुबह में (ध) कभी नही

10बालगोबिन भगत की पुत्रवधू कैसी थी ?

(क) सुशील (ख) क्रोधी (ग) चालाक (ध) तेज

11 बालगोबिन भगत ने किसे पुनर्विवाह का आदेश दिया

(क) पुत्रवधू को (ख)बेटे को (ग) लेखक को (ध) किसी को नही

12 बालगोबिन भगत गंगा स्नान करने कैसे जाते थे ?

(क) पैदल (ख) बैलगाड़ी से (ग) नाव से (ध) बस से

13 "आवृत" का अर्थ है–

(क) उभरा हुआ (ख) ढका हुआ (ग) सहारा (ध) सीढी

14 'साधु को संबल लेने का क्या हक ? किस पाठ की पंक्ति है ?

(क) ठेस (ख)ईदगाह (ग) बालगोबिन भगत (ध) खेमा

15 खेती–बारी के समय गांव के किसान किसकी गिनती नहीं करते?

(क) लेखक की (ख) सिरचन की (ग) दोनो की नहीं (ध) किसी की नहीं

16 पद्मा कहां की राजकुमारी थी ?

(क) मगध (ख) कलिंग (ग) वैशाली (ध) इनमें कोई नही

17 'अपयश" में कौन सा उपसर्ग है ?

(क) अप (ख) उप (ग) अप् (ध) इनमें कोई नही

18 उपसर्ग कितने प्रकार के होते है ?

(क) तीन (ख) दो (ग) चार (ध) पाँच

19 'वो 'शब्दांश जो किसी मूल 'शब्द के पहले लग कर उसका अर्थ बदल देते है ' को क्या कहते हैं ?

(क) संज्ञा (ख)सर्वनाम (ग)उपसर्ग (ध) प्रत्यय

20 जिस समास में विशेषण–विशेष्य का संबंध होता है उसे कहते है–

(क) तत्पुरुष (ख) अव्ययी भाव (ग) द्विगु (ध) कर्मधारय

21 'चिकित्सा का चक्कर ' पाठ के लेखक है:–

(क) प्रेमचंद (ख)रामधारी सिंह दिनकर (ग) अज्ञेय (ध) बेढ़व बनारसी

22 बहुब्रीहि समास का उदाहरण है–

(क) दशानन (ख) पंचवटी (ग) नवग्रह (ध) राजा–रंक

23 'खेमा' पाठ है–

(क) कहानी (ख) निबंध (ग) डायरी (ध) एकांकी

24 'जननायक कर्पूरी ठाकुर' पाठ है–

(क) निबंध (ख) जीवनी (ग) डायरी (ध) कहानी

25 खेमा किसके होटल मे काम करता था ?

(क) कसारा (ख) लेखक के (ग) अपने पिताजी के (ध) इनमें से किसी के नही

26 खेमा रात को कितनी देर कसारा के पाँव दबाता था ?

(क) दो घंटे (ख)चार घंटे (ग) आधे घंटे (ध) एक घंटे

27 'कदम' कहाँ की रहने वाली है ?

(क) मुंगेर (ख) रोहतास (ग)अररिया (ध) कैमूर

28 द्विगु समास का उदाहरण कौन सा है ?

(क) पंचवटी (ख) नीलगाय (ग) महादेव (ध) महाराजा

29 जिस समास का पहला पद संख्यावाची विशेषण हो उसे कहते है-

(क) कर्मधारय (ख) तत्पुरुष (ग) द्विगु (ध) अव्ययीभाव

30 'अनुकूल' का विलोम शब्द है-

(क) प्रतिकूल (ख) कोमल (ग) उदय (ध) जीवन

31 'अभिमान' का विलोम शब्द है-

(क) नम्रता (ख) स्वाधीन (ग) पराधीन (ध) इनमे कोई नही

32 'आकाश' का पर्यायवाची है-

(क) गगन (ख) मगन (ग) आंगन (ध) समान

33 अब्दुल रहमान खान को किस पर गर्व है ?

(क) जैनब खानम पर (ख) सोनी पर (ग) गुड़िया पर (ध) कदम पर

34 कर्पूरी ठाकुर का जन्म हुआ था-

(क) समस्तीपुर में (ख) भागलपुर मे (ग) पटना में (ध) रोहतास में

35 कर्पूरी ठाकुर को सर्वप्रथम किस जेल में रखा गया ?

(क) दरभंगा जेल (ख) भागलपुर जेल (ग) हजारीबाग जेल (ध) इनमे से कहीं नही

36. अगस्त क्रांति कब हुई थी ?

(क) 1942 (ख)1932 (ग) 1945 (ध) 1931

37. कर्पूरी ठाकुर का जन्म हुआ था-

(क) 1921 (ख) 1922 (ग) 1920 (ध) 1924

38 कर्पूरी ठाकुर के घर से कॉलेज की दूरी कितनी थी ?

(क) 20 किमी0 (ख) 30 किमी0 (ग) 50-60 किमी0 (ध) 80 किमी0

39 कर्पूरी ठाकुर का निधन हुआ–

(क) 1980 (ख) 1982 (ग) 1984 (ध) 1988

40 जिस समास में अंतिम पद प्रधान हो उसे कहते है–

(क) तत्पुरूष समास (ख) द्विगु समास (ग) कर्मधारय समास (ध) अव्ययीभाव

41 'वारिस' का अर्थ होता है–

(क) संतान (ख)मनुष्य (ग) दक्ष (ध)इनमे कोई नही

42 वीर ..... की गाथाएँ उसको याद जबानी थी। पंक्ति को पूर्ण करें।

(क) शिवाजी (ख) नाना साहेब (ग) महाराणा प्रताप (ध) मराठा

43 सुदामा किनके मित्र थे ?

(क) भीष्म के (ख)भीम के (ग) अर्जुन के (ध) कृष्ण के

44 'आत्मा परमात्मा के पास चली गई' किस पाठ की पंक्ति है ?

(क) ढेस (ख) खेमा (ग) ईदगाह (ध) बालगोबिन भगत

45 बेटे की मृत्यु पर बालगोबिन भगत ने किससे आग दिलवाई ?

(क) पुत्रवधू से (ख) पुत्रवधू के भाई से (ग) खुद से दी (ध)किसी ओर से

46 हुंडरू का झरना कहां है ?

(क) बिहार मे (ख) झारखंड मे (ग) पंजाब में (ध) हरियाणा मे

47 'प्रकाश' का पर्यायवाची है

(क) ज्योति (ख) धमंड (ग) पुष्प (ध) सुमन

48 'ईदगाह' के लेखक हैं –

(क) प्रेमचंद (ख) अज्ञेय (ग) दिनकर (ध) अरूण कमल

49 'विस्मित' का अर्थ होता है–

(क) धमंड (ख) घमंडी (ग)अच्छा (ध) आश्चर्यचकित

50 'रश्मि' का पर्यायवाची है–

(क) किरण (ख) स्नेह (ग) ममता (ध) केशव

समूह- ब

(1) निम्न में से किसी एक विषय पर 250-300 शब्दों में निबंध लिखे। 1x10=10

1. मेरा प्रिय त्योहारः दशहरा
2. शिक्षक दिवस
3. विद्यालय पुस्तकालय
4. मेरे प्रिय लेखकः प्रेमचंद
5. वृक्षा रोपण

2. परीक्षा में सफल होने पर अपने मित्र को बधाई दीजिए। 1x05=05

अथवा

बढ़ती बेरोजगारी पर दो मित्रो के मध्य हुए संवाद को लिखिए।

3. निम्न लिखित गद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखें।

हमारा वर्तमान समाज जाति,उपजाति , समता -विषमता में विभाजित और अंधविश्वास से भी ग्रसित है। किसी युग का सबसे बड़ा निर्माण उसका विद्यार्थी होता है।

अतः आज के नवयुवकों के दायित्व तथा उसका सबसे बड़ा बसंत उसकी नई पीढ़ी होती है। जब वह पराजित होती है तो सब कुछ व्यर्थ होता जाता है। यदि आप निराश हो तथा यह कहें कि समाज या कर्मक्षेत्र अथवा राजनीति में हमारा स्थान नहीं है, तो मेरा आपके लिए उचित परामर्श यह है कि आप पहले अपना स्थान बनाएं।

कोई नदी जो हिमालय के हृदय से निकलती है, चाहे बड़ी हो या छोटी , वह धारा में तनकर खड़ी शिलाओं से मार्ग नहीं मांगती । क्या उसने कभी कहा है कि घाट बनाइए, संगमरमर के, चाँदी या सोने के उसने कभी कोई याचना नहीं की । वह शिलाओं की परवाह न करती हुई अपने प्रबल वेग से सब को पार करती हुई चलती है और उसका यह नियम है कि अपने तट भी वह स्वयं बनाती है। इसी प्रकार प्रत्येक पीढ़ी भी अपना मार्ग अपने आप बनाती है और स्वयं ही नियंत्रित करती है अपनी मर्यादा भी| जो नदी समुद्र से हिमालय का जोड़ती है वह मर्यादा भी बनाती है, वह नदी तट भी बनाती है, तट उसे बने-बनाए नहीं मिलते ।

प्रश्नः-

1.हमारा समाज किन रूपों में विभाजित है ?

2. आज के नवयुवकों के लिए क्या परामर्श है ?

3.नदी शिलाओं से क्या नहीं माँगती ?

4. नदी का क्या नियम है ?

6.नदी को क्या नहीं मिलता ?

4. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखें।

आधुनिक समय में पुस्तकों का स्थान धीरे-धीरे कम होता जा रहा है पाश्चात्य शैली के जीवन के अनुकरण से व्यक्ति का ध्यान टी.वी. अथवा इंटरनेट पर अधिक केंद्रित रहने लगा है |व्यक्ति निजी

जीवन में मनोंरजन के लिए हमेशा विद्यार्थी बना रहना अच्छा समझता है और इससे अपने ज्ञान को विस्तार भी देता हैं

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है–संसार में मनुष्य ही अकेला जीव है जो साहित्य लिखता या पढ़ता है| भोजन सभी जीव करते है, पर साहित्य सभी जीव नहीं पढ़ते है। यहमस्तिष्क का खाद्यान्न है जो मन को संतुष्ट करता है | सद्चरित्र का निर्माण करता है और सद्–चरित्र समस्त समाज में सराहा जाता है।

पुस्तकें अध्ययन का आधार होती है। कौन सी पुस्तकें है जो आनंद देती है ? बेकन का यह मत उल्लेखनीय है कि पुस्तके तीन प्रकार की होती है। कुछ तो ऐसी ,जिन्हें पन्ने उलट कर फेक दो,कुछ ऐसी , जिन्हें एक बार पढ़ डालो, परंतु कम संख्या ऐसी पुस्तकों की होगी , जो तुम्हें बार–बार पढ़नी चाहिए।' अतः अध्ययन का वास्तविक आनंद अथवा रस साहित्य के स्वाध्याय में है। स्वाध्याय नियमित रहे तो सबसे उतम है।

प्रश्नः–

1. पाश्चात्य जीवन शैली का क्या प्रभाव पड़ा है ?
2. अध्ययन से क्या फायदे होते है ?
3. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने क्या लिखा है ?
4. पुस्तकों के संबंध मे बेकन का क्या मत है ?
5. अध्ययन का वास्तविक रस किसमें है?

2x05=10

5.लघुउतरीय प्रश्नः–

किन्ही पाँच के उतर देः–

1 हामिद ने चिमटे को किन–किन रूपों मे उपयोग करने की बात कही है ?
2 महमूद, मोहसिन और नूरे ने कौन–कौन से खिलौने खरीदे थे और कितने में ख़रीदे थे ?
3 व्यक्ति की सफलता का निर्धारण कौन करती है ?
4 भगत ने अपने बेटे के मृत्यु पर अपनी भावनाएँ किस तरह व्यक्त की ?
5 पाठ के अनुसार ईर्ष्यालु से बचने का क्या उपाय है ?
6 विक्रमशिला विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में क्या शामिल था ?
7 खेमा के पिता ने उसे क्यों बेच दिया ?
8 कर्पूरी ठाकुर को कौन - कौन से कार्य करने मे आनंद मिलता था ?

1x05=05

(6) दीर्घ उतरीय प्रश्न

कर्पूरी ठाकुर अपने परिजनों को प्रतीक्षा करने को क्यों कहते हैं ?

अथवा

चिकित्सा का चक्कर पाठ में लेखक को बीमार पड़ने की इच्छा क्यों हुई ?

मेरा प्रिय त्योहार : दशहरा

दशहरा हिन्दुओं के प्रसिद्ध त्योहारो में से एक है। दशहारा शब्द दश+हरा से मिलकर बना है। मर्यादा पुरूषोतम राम ने इस दिन रावण के दस सिरों का वद्ध न्याय, धर्म और सत्य की रक्षा के लिए किया था। इसीलिए यह दिन दशहरा कहलाया और इसी याद में यह त्योहार प्रतिवर्ष आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की दशमी को विजय दशमी के रूप में मनाया जाता है। विजयदशमी या दशहरा बुराई पर अच्छाई दुष्टता पर सज्जनता और अधर्म पर धर्म की तथा अन्याय पर न्याय की विजय का प्रतीक है।

भारत वर्ष में दशहरे के दस दिन पूर्व से (नवरात्रों में) श्री राम की लीला का अद्भुत प्रदर्शन होता है । इस दिन श्रीराम तथा रावण के युद्ध का प्रदर्शन होता है जिसमें रावण मारा जाता है तथा श्रीराम की विजय होती है। अन्त में रावण ,कुम्भकरण व मेघनाद के आतिशबाजी युक्त पुतलों को जलाया जाता है । इस दिन सारे भारत में अनेक विशाल मेलों का आयोजन होता है । बच्चें ,बूढें स्त्री-पुरूष सभी नए, वस्त्र धारण करके इन मेलो का आनंद लेने जाते है।

बंगाल में लोग इस दिन देवी दुर्गा की पूजा करते है। वहाँ नवरात्रों में नौ दिन तक महिषासुर मर्दिनी कालिका का पूजन होता है। आमतौर पर पूरे देश में आश्विन शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को कलश-स्थापन होता है। आगे के दिनों में क्रमशः मां दुर्गा की आठ रूपों की पूजा होती है। जिस कारण इन्हें 'अष्टभवानी 'भी कहा गया है। विजय दशमी के दिन माँ दुर्गा की प्रतिमा को नदी तालाब अथवा समुद्र में विसर्जित कर दिया जाता है। अनेक भक्त-जन नौ दिनों तक व्रत रखते है।

यह दिन अनेक कार्यो के लिए शुभ माना जाता रहा है। प्राचीन काल में यातायात के साधन सुलभ नहीं होते थे। अतः व्यापारी,यात्री ,साधु तथा सैनिक अपनी यात्रा इस दिन को शुभ मान कर प्रारंभ करते थें ।

शक्ति का प्रतीक दशहरा भारतीय समाज में एक नई स्फूर्ति ,नया जीवन तथा नए उत्साह का संचार करता है। इस पर्व में हमें यही शिक्षा मिलती है। कि सर्वदा सत्य की विजय तथा असत्य की पराजय होती है। अर्थात् अन्याय व अत्याचार को सहन करना महान दुर्बलता, नपुंसकता तथा पाप है। यह पर्व सदा से राष्ट्र के उत्थान तथा समाज की प्रगति मे सहायक रहा है। अतएव हमें इस शक्ति पर्व विजयदशमी की पूजा-उपासना उसी श्रद्धा व विश्वास से करनी चाहिए।

शिक्षक दिवस

शिक्षक अथवा अध्यापक वह व्यक्ति होता है जो दूसरों को पढ़ा -लिखा कर शिक्षा देने का काम करता है। इस तरह शिक्षक पूरे समाज को आलोकित करता है। भारत देश सदैव से गुरूओं व शिक्षकों का देश रहा है। इस देश में शिक्षकों-अध्यापकों व गुरूओ का मान-सम्मान हमेशा से बहुत अधिक रहा है जो आजकल प्रायः नगण्य है। आजकल भारत मे भी संसार के अन्य देशों के समान शिक्षा का लेना-देना एक प्रकार का व्यवसाय बन कर रह गया है। यह स्थिति कोई सराहनीय तो नहीं हैं।

शिक्षक के महत्व को समझा जाए शिक्षक भी शिक्षा देने को व्यवसाय न मानकर उसे एक पवित्र कार्य या अपना कर्तव्य सपझें | शिक्षक का खोया सम्मान उसे फिर से प्राप्त हो जाए या उसे यह सम्मान दिलाया जा सके–यही भावना रही है शिक्षक दिवस को मनाने के पीछे । शिक्षक दिवस मनाने का सम्बन्ध जोड़ा गया देश के राष्ट्रपति रहे महामहिम सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन के जन्म दिवस के साथ। अर्थात् तभी से यह दिवस प्रति वर्ष 5 सितम्बर को मनाया जाने लगा। इसके पीछे कारण था उनका आदर्श अध्यापकत्व। वे अपने–जीवन मे एक कुशल शिक्षक भी रहे थे। वास्तविक रूप में ये एक महान शिक्षक तथा आदर्श गुरू थे।

शिक्षक दिवस के दिन सभी विद्यालयों में सभाएँ व गोष्ठियाँ होती है। बच्चों को अध्यापकों के मान सम्मान से सम्बन्धित प्रेरणा दी जाती है कई विद्यालयों में तो इन दिन विद्यार्थियों को ही अध्यापन का कार्य सौंपा जाता है ताकि उन्हें अध्यापक के कार्य के महत्व का आभास हो सके। अध्यापकों के संघ–संगठन भी इस दिन को शिक्षको के गौरव के अनुरूप ,गौरव को ,स्थायी बनाए रखने के लिए विभिन्न विचारों का अदान प्रदान किया करते हैं। कई बार प्रांतीय व राष्ट्रीय स्तर के सम्मेलन का आदान–प्रदान किया करते हैं।

इस दिन प्रान्तीय व राष्ट्रीय स्तर पर उच्च आदर्श स्थापित करने वाले अध्यापकों को पुरस्कृत भी किया जाता है। इस दिवस के मनाने का मूल उदेश्य है कि राष्ट्र के निर्माता कहे या माने जाने वाले शिक्षक को उचित सम्मान दिया जाना। किसी भी राष्ट्र की बौद्धिक संरचना में शिक्षक का योगदान अमूल्य होता है। अतएव, शिक्षको का भी कर्तव्य होता है कि वे अपनी गरिमा के अनूकूल उच्च आदर्श स्थापित करें । यदि हम सच्चे मन से सादगी और राजनीतिक–निरपेक्षता से इस दिवस को मनाएँ तो हम भारत की परम्परागत गुरू–शिष्य परम्परा को सब तरह से पुनर्जीवित कर सकते है।

विद्यालय :पुस्तकालय

पुस्तकालय वह स्थान है, जहाँ विभिन्न विषयों से सम्बन्धित पुस्तकों का संग्रह होता है। पुस्तकालय में आर्थिक, सामाजिक, वैज्ञानिक, साहित्यिक व धार्मिक सभी विषयोंसे सम्बन्धित पुस्तकें उपलब्ध होती है। पुस्तकालय विद्यार्थियों के सबसे अच्छे मित्र है। इनमें विद्यार्थी अपने अवकाश के समय जाकर ज्ञानर्जन करते है तथा विश्व की प्रमुख घटनाओं से परिचित होते है।

पुस्कालय प्रायः तीन प्रकार के होते हैः (1) निजी अथवा व्यक्तिगत, (2) शैक्षणिक या वर्गगत व (3) सार्वजनिक पुस्कालय। निजी पुस्तकालय में लेखक, वकील , डाक्टर , प्राध्यापक तथा राजनीतिक आदि के निजी संग्रह या पुस्तकालय आते है। शैक्षणिक या वर्गगत श्रेणी में किसी संस्था जैसे विद्यालय या महाविद्यालय के पुस्तकालय सम्प्रदाय या वर्ग से सम्बन्धित पुस्तकालय आते है। सार्वजनिक पुस्तकालय प्रायः संस्थागत या राजकीय होते है जिनका प्रयोग हर कोई कर सकता है। इन्हें लोक पुस्कालय भी कहा गया हैं। प्रत्येक पुस्कालय के कुछ नियम होते है जैसे –हमें वहाँ शांति से बैठकर अध्ययन करना चाहिए । पुस्तकें जहाँ से ली जाएं वहीं पर यथाक्रम रख देनी चाहिए । पुस्तकों से कोई चित्र अथवा पृष्ठ नहीं फाड़ने चाहिए।

हमारे विद्यालय में भी एक पुस्तकालय है जो बडे कक्ष में स्थापित किया गया है। इसमें विभिन्न विषयों की अनेक पुस्तकें रखी गई हैं। पुस्तकालय एक प्रकार से सरस्वती का मंदिर होता है । यहाँ शिशु,युवक ,वृद्ध ,नर तथा नारी बिना किसी भेदभाव के जा सकते है तथा अपनी रूचि के अनुसार पुस्तके प्राप्त कर सकता है । यहाँ शैक्षणिक विषयो के साथ–साथ बड़े–बडे उपन्यास ,कहानी –सग्रह नाटक आदि मनोरंजन की भी पुस्तके उपलब्ध

होती हैं। विद्यार्थियों के लिए परीक्षोपयोगी पुस्तकें भी मिलती हैं। कविता पाठ करने वालों के लिए काव्य संग्रह भी मिल जाते हैं।

पुस्तकालयों की उपयोगिता इस बात से भी स्पष्ट होती है कि जिस गरीब घर-परिवार के छात्रों के पास पुस्तकें क्रय करने की शक्ति नहीं होती है वे भी पुस्तकालय में बैठकर भिन्न-भिन्न विषयो की पुस्तकें से नोट्स तैयार करके परीक्षा की तैयारी कर सकते हैं

मेरे प्रिय लेखक :प्रेमचंद

हिन्दी कथाकार और उपन्यास सम्राट प्रेमचंद गांधीवादी विचारधारा के अग्रणी साहित्कारों में माने जाते है। आमतौर पर लोग इन्हें मुंशी प्रेमचंद कहा करते थें| प्रेमचंद जी का जन्म वाराणसी जिले के पाण्डेयपेर नामक कस्बे के समीप लमही नामक ग्रम में 31 मई ,1880 को हुआ था। इनके पिता श्री अजायबराय कायस्थ घराने के सदाचारी व्यक्ति थे। जो उन दिनों डाक घर में मुंशी थें। इनकी माता आनंदी देवी सीधी-सरल महिला थी। बचपन में इन्होंने अपने प्रिय पुत्र का नाम धनपतराय रखा जो बाद में हिन्दी जगत में मुंशीप्रेमचंदकेनाम से अमर हो गए।

प्रेमचंद को अक्षर झान के लिए ग्रम की पाठशाला में भेजा गया जहां इन्होंने अपनी शिक्षा उर्दू में शुरू की। उन दिनों उतर प्रदेश (संयुक्त प्रांत आगरा और अवध) में उर्दू का प्रचलन था। मुंशी जी ने सन् 1898 ई. में किंग्जवे कॉलेज से मैट्रिक (इन्ट्रेंस) परीक्षा पास की। इसके बाद सरकारी नौकरी में आकर सी.टी तथा इन्टर (एफ.ए.) परीक्षा उर्तीण की। सरकारी नौकरी में उन्नति करके ये सब डिप्टी इन्सपेक्टर ऑफ स्कूल्स मदरसा बन गए थें। सन् 1921 में इनके उपर तत्कालीन स्वतंत्रता सेनानियों का प्रभाव पड़ा और सरकारी नौकरी छोड़कर वस्ती जिले में मास्टरी करने लगे। यहां पर रहते हुए इन्होंने गोरखपुर से बी.ए. पास किया। खराब स्वास्थ तथा काम की अधिकता के कारण ये स्कूल की मास्टरी भी ज्यादा दिन कर पाने में असमर्थ रहे। अतः इन्होंनें दुलारेलाल भार्गव के अनुरोध पर लखनउ में "माधुरी" का सम्पादन करना शुरू किया। यहां पर ज्यादा समय तक ये टिक नहीं सके और काशी आकर 'हंस' तथा 'जागरण' पत्र निकालना शुरू कर दिया । लगातार स्वास्थ्य खराब रहने के कारण इनका निधन 8 अक्टूबर, 1936 को हो गया| इस प्रकार मात्र 56 वर्ष की आयु होने तक हिन्दी जगत के इस श्रेष्ठ कथाकार ने अनेक कहानियों तथा दर्जनों उपन्यासों से हिन्दी साहित्य के भण्डार को भर दिया।

प्रेमचंद जी ने अपने अल्पकालिक जीवन में 200 कहानियां लिखी जिनका संग्रह मानसरोवर के नाम से आठ भागो में प्रकाशित हो चुका है। इन्होने कर्मभूमि, कायाकल्प ,प्रतिज्ञा ,प्रेमाश्रम, निर्मला, गोदान, रंगभूमि, सेवा सदन, गबन, जैसे श्रेष्ठ उपन्यास लिखें। इनका लिखा नाटक चन्द्रहार काफी प्रसिद्ध है किन्तु उपन्यास लिखने में इन्हें भारी सफलता मिली। प्रेमचंद जी ने निबंध, जीवनचरित तथा बाल साहित्य भी लिखा है जिसे काफी लोकप्रियता मिली है।

प्रेमचंद जी के पात्रों में वर्ग का प्रतिनिधित्व अधिक रहता था उनमें व्यक्ति की अपेक्षा समाज की झलक ज्यादा दिखाई देती है।

प्रेमचंद उपन्यास सम्राट कहे जाते हैं। उनकी कहानियां भी हिन्दी साहित्य में अपना विशिष्ट स्थान रखती हैं। बड़े भाईसाहब, कफन, शतरंज के खिलाड़ी आदि में मानवीय भावनाओं का सहज चित्रण देखने को मिलता|

वृक्षारोपण

वृक्षारोपण का शाब्दिक अर्थ है –वृक्ष लगाकर उन्हें उगाना । इसका प्रयोजन है के सन्तुलन को बनाए रखना। मानव के जीवन को सुखी, समृद्ध व सन्तुलित बनाए रखने के लिए वृक्षारोपण का अपना विशेष महत्व है। मानव सभ्यता का उदय तथा इसका आरम्भिक आश्रय भी प्रकृति अर्थात् वन–वृक्ष ही रहे है। मानव को प्रारंभ से प्रकृति द्वारा जो कुछ प्राप्त होता रहा है उसे निरंतर प्राप्त करते रहने के लिए वृक्षारोपण अति आवश्यक है।

मानव–सभ्यता के उदय के आरम्भिक समय में वह वनों में वृक्षों पर या उनसे ढकी कन्दराओं में ही रहा करता था| वह (मानव) वृक्षों से प्राप्त फल–फूल आदि खाकर या उसकी डालियों को हथियार के रूप में प्रयोग करके पशुओ को मारकर अपना पेट भरा करता था। वृक्षों की छाल को वस्त्रों के रूप में प्रयोग करता था यहाँ तक कि ग्रन्थ आदि लिखने के लिए जिस सामग्री का प्रयोग किया जाता था वे भोज–पत्र अर्थात् विशेष वृक्षो के पत्ते ही थे। भूमि पर वृक्षों के पत्ते गिरकर सड़ जाते हैं तथा ये मिट्टी में मिलकर खाद बन जाते है और भूमि की उर्वरा शक्ति को बढ़ाते है।

मानव सभ्यता के विकास के साथ जब मानव ने गुफाओं से बाहर निकल कर झोंपडियो का निर्माण आरंभ किया तो उसमें भी वृक्षों की शाखाएँ व पत्ते काम आने लगे। आज भी जब कुर्सी मेज ,सोफा , सैट रैक आदि का प्रयोग बढ़ता जा रहा है। ये भी मुख्यतः लकड़ी से ही बनाए जाते है। अनेक प्रकार के फल, फूल और औषधियाँ भी वृक्षों से ही प्राप्त होती है। वर्षा जिससे हमें जल व पेयजल प्राप्त होते हैं वह भी प्रायः वृक्षों के अधिक होने पर ही निर्भर करती है। इसके विपरीत यदि हम वृक्ष–शून्य की स्थिति की कल्पना करें तो उस स्थिति में मानव तो क्या समूची जीव–सृष्टि की दशा ही बिगड़ जाएगी। इस स्थिति से बचने के लिए वृक्षारोपण करना अत्यंत आवश्यक है।

आजकल नगरों तथा महानगरों में छोटे–बड़े उद्योग–धन्धों की बाढ़ सी आती जा रही है। इनसे धुआँ,तरह–तरह की विषैली गैसें आदि निकलकर वायुमण्डल में फैलकर हमारे पर्यावरण में भर जाते है। पेड़–पौधे इन विषैली गैसों को वायुमण्डल में फैलने से रोककर पर्यावरण को प्रदूषित होने से रोकते है। यदि हम चाहते है कि हमारी यह धरती प्रदूषण –रहित रहे तथा इस पर निवास करने वाला मानव सुखी व स्वस्थ बना रहे तो हमें पेड़–पौधों की रक्षा उनके नवरोपण की ओर ध्यान देना चाहिए।

2 :-

कुम्हरार, पटना

प्रिय रोहन,

15-01-17

तुम्हारा पत्र मिला यह जानकर अपार हर्ष हुआ कि तुम वार्षिक परीक्षा में प्रथम आए हो। बधाई हो मित्र। ईश्वर करे तुम इसी प्रकार उन्नति के शिखर पर चढ़ते जाओ। मेरी ओर से हार्दिक बधाई स्वीकार करो ।

तुम्हारा आर्यन

अथवा

रविः अरे मोहन इतने परेशान। कहाँ से आ रहे हो ?

मोहनः पटना गया था, बैंक क्लर्क की परीक्षा थी। देख रहे हो इतनी डिग्रियाँ लेकर भी आज तक नौकरी के लिए घूम रहा हूँ।

रविः हाँ मित्र। सही कह रहे हो । तुम्हे याद है न कितने धक्के खाए थे मैने भी नौकरी के लिए।

मोहनः (गंभीर मुद्रा में) हाँ वो तो है।

रविः पर तुम हिम्मत मत हारना कहीं न कहीं सफलता अवश्य मिलेगी।

मोहनः (लम्बी साँस लेते हुए) हाँ तुम ठीक कहते हो।

रविः चलो तुम्हें चाय पिलाता हूँ।

(मोहन रवि के साथ चल देता हैं)

(3) 1. हमारा समाज जाति उपजाति समता विषमता आदि रूपों में विभाजित है।

2. आज के नवयुवकों के लिए परामर्श है कि वह निराश न हों एवं समाज में अपना स्थान बनाएँ।

3. नदी शिलाओं से कभी मार्ग नहीं माँगती।

4. नदी का नियम है कि वह अपने तट भी स्वयं बनाती है।

5 नदी को बने बनाए तट नहीं मिलते।

(4) 1. पाश्चात्य जीवन के प्रभाव स्वरूप व्यक्ति का ध्यान टी0वी0 अथवा इंटरनेट पर अधिक केंद्रित रहने लगा है।

2. अध्ययन से व्यक्ति के ज्ञान का विस्तार होता है।

3. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है कि भोजन सभी जीव करते है परंतु संसार में सिर्फ मनुष्य ऐसा जीव है जो साहित्य लिखता या पढ़ता है।

4. बेकन कहते है कि पुस्तकें तीन प्रकार की होती है कुछ ऐसी जिनके पन्ने पलट कर फेंक दो कुछ ऐसी जिन्हें एक बार पढ़ डालो पर बहुत कम संख्या ऐसी पुस्तकों की होती है जिन्हे बार पढ़ना चाहिए।

5 अध्ययन का वास्तविक रस साहित्य के स्वाध्याय में है।

(5) 1. चिमटे का उपयोग बताते हुए हामिद कहता है कि कंधे पर रखा तो बन्दूक हो गई हाथ में लिया तो फकीरों का चिमटा हो गया। चाहूँ तो मंजीरे का काम ले सकता हूँ।

2. मोहसिन ने भिश्ती महमूद ने सिपाही एवं नूरे ने वकील खरीदा था। सबने अपने अपने खिलौने दो दो पैसे में खरीदे थे।

3. कर्म के प्रति निष्ठा ही व्यक्ति की सफलता का निर्धारण करती है।

4. अपने बेटे की मृत्यु होने पर भगत उसके शव के पास बैठकर भक्ति गीत गाने लगे। अपनी पतोहू को समझते हुए कहने लगे कि रोने का नहीं आनंद मानने का समय है आत्मा परमात्मा के पास चली गई है।

5 पाठ के अनुसार ईर्ष्यालु लोगों से बचने का एक मात्र उपाय एकांत है। सुयश एवं शोहरत से दूर एकांत में रहकर ही ईर्ष्यालु लोगों से बचा जा सकता है।

6 विक्रमशिला विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम मे तंत्र विद्या, व्याकरण, न्याय, चिकित्सा विद्या, सृष्टि विज्ञान, अध्यात्मविद्या आदि शामिल थे।

7 .खेमा के पिता की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी। अतः उसके भरण –पोषण के दायित्व से मुक्त होने के लिए उन्होंने उसे बेच दिया।

6 कर्पूरी ठाकुर को दौड़ने तैरने ग्रामीण गीतो को गाने एवं गाँव की मंडली में डफ बजाने में आनंद मिलता था।

(6) कर्पूरी ठाकुर यह मानते थे कि उनपर प्रथम अधिकार देश का है और जब तक देश के प्रत्येक निवासी को सम्मान जनक और सुविधा संपन्न स्वाधीन जीवन यापन करने का अवसर नहीं मिलेगा तब तक उनके परिजनो को भी प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।

अथवा

लेखक की बड़ी इच्छा होती थी कि उनकी पत्नी उनकी सेवा करें उनके दोस्त लोग आकर उनके सामने बैठते और गंभीर मुद्रा धारण कर पूछते कि कहिए बेढब जी कैसी तबीयत है ? किसकी दवा हो रही है ? कुछ फायदा है ? जब कोई इस प्रकार रोनी सूरत बनाकर प्रश्न करता तो लेखक को बहुत आनंद आता था। अतः लेखक की इच्छा बीमार पड़ने की हुई।

SET - 5

1	ग	21	घ	40	क
2	ग	22	क	41	क
3	ग	23	क	42	क
4	घ	24	ख	43	घ
5	ग	25	क	44	घ
6	ख	26	क	45	क
7	ग	27	क	46	ख
8	ख	28	क	47	क
9	ख	29	ग	48	क
10	क	30	क	49	घ
11	क	31	क	50	क
12	क	32	क		
13	ख	33	क		
14	ग	34	क		
15	ख	35	क		
16	ख	36	क		
17	क	37	क		
18	क	38	ग		
19	ग	39	घ		
20	घ				